भाषा सिखाने में कठपुतलियों का इस्तेमाल

प्रेमा डैनियल

बच्चे के सीखने के अनुभव में भाषा सबसे महत्त्वपूर्ण उपकरण होती है। बच्चों को उनकी मातृभाषा के अलावा अन्य भाषाओं से बहुत कम उम्र में ही परिचित करवा दिया जाता है। अधिकांश स्कूल शिक्षा का माध्यम अँग्रेज़ी को बनाते हैं क्योंकि माता-पिता यह चाहते हैं कि उनके बच्चों का जल्दी-से-जल्दी अँग्रेज़ी से नाता बने, क्योंकि इसे सफलता की शुरुआती सीढ़ी माना जाता है।

अँग्रेज़ी न आने पर शिक्षक अक्सर बच्चों पर 'मूर्ख' होने का ठप्पा लगा देते हैं और यह मान लेते हैं कि उनका बौद्धिक स्तर कम है। अँग्रेज़ी पढ़ाने की व्यग्रता में शिक्षकों को लगता है कि चिल्लाकर आज्ञाएँ देने से, बच्चों से किसी बात को पाँच या छह बार लिखवाने से, और उनसे कोई संवाद किए बगैर लगातार निर्देश दिए चले जाने से बच्चों को अँग्रेज़ी आ जाएगी।

किसी भी भाषा को सीखने का एक महत्त्वपूर्ण ढंग है : भाषायी अनुभव पद्धति (*लैंग्वेज एक्सपीरियंस अप्रोच*)।

इसके प्रमुख घटक हैं :

- अंग-संचालन पर नियंत्रण
- देखकर भेद करने की क्षमता
- सुनकर भेद करने की क्षमता

ये तीन घटक भाषा के मुख्य कौशलों को विकसित करते हैं, और वे कौशल हैं : सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा सिखाने की इस पद्धति में कठपुतलियों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया जा सकता है।

कठपुतलियाँ ही क्यों?

जो भी काम शिक्षक कर सकता है, उसे एक कठपुतली भी कर सकती है। कठपुतलियाँ नाच सकती हैं, बात कर सकती हैं, गा सकती हैं, कूद सकती हैं, पढ़ सकती हैं, लिख सकती हैं और पढ़ा भी सकती हैं। कठपुतलियों के साथ कक्षा जीवन्त हो जाती है।

परिणामस्वरूप बच्चे :

- दूसरों के साथ संवाद कर सकते हैं, सुनने के अच्छे कौशलों का अभ्यास कर पाते हैं, सामाजिक उपकरण की तरह भाषा का इस्तेमाल कर पाते हैं, अच्छे साहित्य को सराहते हुए उसका मज़ा ले पाते हैं, व्याकरण सम्मत भाषा का उपयोग कर पाते हैं, उनकी

अभिव्यक्ति प्रवाहमय और स्वाभाविक होती है और चिल्लाए बिना साफ़-साफ़ अपनी बात कह पाते हैं।

- यदि कठपुतलियों के साथ कोई लेबल और संकेतचिन्ह इस्तेमाल किए जाएँ, तो बच्चे लिखित भाषा भी सीख सकते हैं।
- बच्चे शिक्षा की इस देखने पर आधारित, सुनने पर आधारित और गति-आधारित मिली-जुली पद्धति से आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकते।

जिस ढंग से बच्चे कठपुतलियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं वह दिलचस्प होता है : वे हक़ीक़त को ताक पर रखकर कठपुतलियों के साथ ऐसे व्यवहार करने लगते हैं जैसे कि कठपुतलियाँ प्राणवान हों। कई शिक्षकों के पास ऐसी कठपुतली होती है जो 'सिर्फ़ अँग्रेज़ी बोलती है' और वे अपने बच्चों से अँग्रेज़ी बुलवाने में इसका प्रभावशाली ढंग से उपयोग करते हैं। कठपुतलियाँ संवाद को बढ़ावा देती हैं क्योंकि बच्चे इन कठपुतलियों के नाम, उनकी उम्र, पसन्द और नापसन्द को जानने का प्रयत्न करते हैं।

बच्चे कभी-कभी इन कठपुतलियों को अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम की तरह इस्तेमाल करते हैं, और बोलने में अपने संकोच से बाहर निकलते हैं। कठपुतलियों के बहाने वे ऐसे खुलकर भाग ले पाते हैं जैसा उन्हें खुद किसी किरदार को निभाने के लिए कहे जाने पर वे न कर पाते। कठपुतलियाँ बच्चों को भी इस काबिल बनाती हैं कि वे नई और भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभा सकें। कठपुतलियाँ कक्षा में विविधता और कभी-कभी एक जादुई अहसास ले आती हैं। आपको यह देखने को भी मिल सकता है कि वे बच्चे जिनका रवैया हमेशा सहयोगात्मक नहीं होता, या जो कक्षा में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाते, वे भी कठपुतलियों की ओर बहुत सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया करते हैं।

कठपुतलियों का इस्तेमाल कक्षा में सामान्य जोश पैदा करने, बातचीत करने, निर्देश देने या बच्चों को भाषा से परिचित करवाने के लिए किया जा सकता है। इनका प्रयोग गानों, सामूहिक गायन, वार्तालापों, आशु रचनाओं और नाटकों में किया जा सकता है।

कठपुतलियों को सीमित जगह में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। विचित्र विशेषताओं वाले पात्रों - जैसे भूत, दैत्य, डायनासौर - जिन्हें सामान्यतः मंच पर प्रस्तुत करना मुश्किल होता है, उन्हें भी दिलचस्प कठपुतलियों में ढाला जा सकता है। इन्हें आपके द्वारा बच्चों को सुनाई जाने वाली कहानियों के साथ तथा खुद बच्चों द्वारा बनाई गई कहानियों के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

कठपुतलियों को इस्तेमाल करने के लिए अभिनय की कुछ योग्यता होना आवश्यक है, जैसे कि अलग-अलग किरदारों के लिए अलग-अलग आवाजों का इस्तेमाल करना। कठपुतली-संचालकों के लिए यह सीखना ज़रूरी है कि कठपुतलियों को कैसे चलाया जाता है। कठपुतलियाँ जो कह रही हैं ठीक उसी मुताबिक उनके मुँह खुलना चाहिए; कभी-कभी कठपुतलियों को स्थिर रहना

होता है, या उपयुक्त ढंग से मुड़ना या चलना होता है, और साथ ही ध्यान से मंच पर प्रवेश करना व बाहर भी निकलना होता है। हालाँकि, बच्चों का कठपुतलियों पर बस इतना नियंत्रण होना चाहिए कि उनका नाटक रोचक रहे और दर्शकों के रूप में बैठे उन्हीं के साथियों को पूरा नाटक समझ में आ सके।

कठपुतलियाँ बनाना

बच्चों को कठपुतलियाँ बनाते समय निर्देशों का पालन करना पड़ता है। बनी-बनाई कठपुतलियों की अपेक्षा शिक्षक/बच्चों के द्वारा बनाई गई कठपुतलियों के दो लाभ होते हैं : पहला तो यह कि इन्हें बनाने में मज़ा आता है, और दूसरा, उनके किरदारों का स्वरूप विकसित करने की चुनौती भी मिलती है। अक्सर बच्चों के लिए मनुष्यों की बजाय पशुओं की कठपुतलियाँ बनाना आसान होता है।

कठपुतली बनाने की प्रक्रिया अपने आप में एक लाभदायक शिल्प गतिविधि है, और इसका अन्तिम उत्पाद - कठपुतली - आने वाली गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कक्षा में प्रभावशाली ढंग से कठपुतलियों का इस्तेमाल करना

- किसी अवधारणा या गतिविधि को प्रस्तुत करने या उसे मज़बूत बनाने के लिए कठपुतलियों का इस्तेमाल करें। बच्चों के समूह से वार्तालाप करते वक़्त कठपुतली को स्थिर पकड़े रहें। बोलते समय कठपुतली को देखें। जब कठपुतली जवाब दे रही हो तो उसका मुँह इस तरह चलाएँ, या उसके शरीर की ऐसी हरकत कराएँ जैसे कि वह बच्चों से बात कर रही हो। और फिर ध्यान रखें कि जब आप या कोई दूसरी कठपुतली बोल रही हो तो उसे स्थिर पकड़े रहें।
- कुछ कठपुतलियाँ केवल शिक्षकों के लिए निर्देशित पाठों में उपयोग करने हेतु होती हैं। ये आमतौर पर विशाल, विशिष्ट कठपुतलियाँ होती हैं जो कक्षा-शुभंकर बन सकती हैं। ये आपके दिन को आनन्दमय बनाने के लिए प्रगट हो सकती हैं, या अगर कमरे में बहुत अधिक शोर मच रहा हो तो डरकर गायब भी हो सकती हैं।
- कक्षा में कठपुतलियाँ बनाने से कक्षा अस्त-व्यस्त हो सकती है। इस गतिविधि के अनुभव से बच्चे उत्तेजित भी हो सकते हैं। इसे छोटे समूहों में स्वतंत्र रूप से या शिक्षक द्वारा निर्देशित गतिविधि की तरह किया जाना चाहिए।
- लचीला रुख अपनाएँ और कठपुतलियाँ बनाने में बच्चे अगर कुछ नवीनता दिखाते हैं तो उन्हें इसकी छूट दें।

कठपुतलियों का इस्तेमाल करते हुए वार्तालाप सिखानेवाली कक्षा

1. कठपुतली से एक पाठ पढ़वाएँ। बच्चे कठपुतली से सवाल पूछें। कठपुतली भी उनसे सवाल पूछ सकती है। आप सवालों को बोर्ड पर लिख सकते हैं।
2. दी गई सामग्री से प्रत्येक बच्चे से लगभग 30 मिनिट में एक सीधी-सादी कठपुतली बनवाएँ। बच्चों द्वारा कठपुतलियाँ बनाए जाने के दौरान भाषा का इस्तेमाल करने का मौक़ा होगा।

जैसे कि "यह बहुत बढ़िया है। ध्यान से काटें। यह सिर हो सकता है। क्या ये उसके पैर हैं?" आदि।

3. अपनी-अपनी कठपुतलियाँ बना लेने के बाद बच्चे उन्हें एक-दूसरे को दिखा सकते हैं और बातचीत कर सकते हैं।
4. जब सभी कठपुतलियाँ तैयार हो जाएँ तो बच्चों से एक गोले में बैठने को कहें। अब प्रत्येक बच्चा अपने बगल में बैठे बच्चे से कठपुतली के माध्यम से बात करे। जब बच्चे किसी शब्द के लिए अटक जाएँ तो उनकी मदद करें।
5. इसके बाद बच्चों का प्रत्येक जोड़ा एक अन्य जोड़े के साथ मिल जाए है, और फिर चार कठपुतलियाँ बातचीत करें।
6. सारे बच्चे कमरे में इधर-से-उधर टहलते हुए एक-दूसरे की कठपुतलियों से बात करें।
7. प्रत्येक बच्चा एक चित्र बनाकर अपनी-अपनी कठपुतलियों के बारे में लिखे।
8. अपनी कठपुतलियों के किरदार तय कर लेने के बाद, वे अब नाटक तैयार कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें किसी कथा की रूपरेखा बताकर उनकी मदद करें।

प्रेमा डैनियल इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के *डिप्लोमा इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन*, और *सर्टिफिकेट कोर्स इन गाइडेंस* की शैक्षणिक सलाहकार हैं। पिछले पाँच सालों से वे तमिलनाडु और दक्षिण भारत के दूसरे हिस्सों में प्राथमिक-पूर्व के शिक्षकों के लिए कार्यशालाएँ, सेमिनार और सेवारत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित कर रही हैं। वे 18 सालों तक एससीएस कोठारी अकादमी फॉर विमेन, चेन्नई में *डिपार्टमैंट ऑफ अर्ली चाइल्डहुड* की संयोजक रहीं हैं। उनसे premadnl@yahoo.co.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

यह *Learning Curve, Issue XIII (Language Learning)* अक्टूबर, 2009 में प्रकाशित लेख Use of Puppetry in Teaching Language का हिन्दी अनुवाद है।

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण एवं सम्पादन :** राजेश उत्साही